राष्ट्रीय संगोष्ठी

शिक्षण, सीखने और जानने की दृष्टियों में बदलाव

(मार्च 28-29, 2015)

आयोजक

शिक्षा विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रायोजक

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद

शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के द्वारा 28- 29 मार्च, 2015 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इसका विषय 'शिक्षण ,सीखने और जानने की दृष्टियों में बदलाव' होगा। इस संगोष्ठी में शोध और क्षेत्रानुभव पर आधारित लेख/ शोध पत्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रस्तुतिकरण के लिए 200 शब्दों का सार निम्नलिखित ई.मेल .आई.डी.पर भेजें : seminaredumgahv@gmail.com

शिक्षण, सीखने और जानने की दृष्टियों में बदलाव

ज्ञान, जानने और सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में हम चार प्रकार के दृष्टियों और उपागमों को पहचान सकते हैं। इन दृष्टियों की मूल मान्यता में निहित है कि ज्ञान क्या है? और ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया क्या है? इन चार दृष्टियों को व्यवहारवाद ,संज्ञानवाद , रचनावाद ,और

निर्माणवाद के नाम से जानते हैं। व्यवहारवाद, व्यवहार में प्रत्यक्ष बदलाव से संबंधित है। यह इस बात पर जो़र देता है कि नया सीखा व्यवहार पुनरावृत्ति द्वारा स्वचालित हो पाता है। संज्ञानवाद , व्यवहार के पीछे स्थित विचार प्रक्रिया को केंद्र में रखता है। यह व्यवहार में बदलाव का अवलोकन तो करता है लेकिन उन्हें केवल विचार प्रक्रिया को समझने का संकेतक मानता है। रचनावाद , इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति निजी अनुभवों और' स्कीमा ' के आधार पर ज्ञान की रचना करता है। व्यक्ति अपने अनुभवों को समझने के लिए 'नियम ' और 'मनस प्रतिरूप 'बनाते है। निर्माणवादी मानते है कि ज्ञान का निर्माण केवल व्यक्ति द्वारा उसके परिवेश के अन्त:क्रिया से संभव नहीं है बल्कि वह , समुदाय के अन्य व्यक्तियों के साथ सक्रिय सहभागिता द्वारा भी ज्ञान का निर्माण करता है। अत :ज्ञान के निर्माण में संज्ञानात्मक और सामाजिक दोनों प्रक्रियाएं शामिल है।

शिक्षण , सीखने और जानने से सम्बंधित व्यवहारवादी , संज्ञानवादी , रचनावादी और निर्माणवादी दृष्टियों द्वारा न केवल सीखने की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है वरन सीखने के नए तरीके को भी डिजा़इन किया जा सकता है। इस गोष्ठी के माध्यम से शिक्षा विभाग ,शिक्षा से जुड़े अध्येताओं और शोधकर्ताओं को उक्त दृष्टियों से सम्बंधित निम्नलिखित विचार क्षेत्रों पर संवाद के लिए आमंत्रित करता है :

- ज्ञानमीमांसीय और शिक्षणशास्त्रीय विश्वास के प्रतिमान
- शिक्षण , सीखने और जानने का मनोविज्ञान
- सांस्कृतिक और भाषायी दृष्टि से विविध विद्यार्थियों के शिक्षण से जुड़े मनोवैज्ञानिक और शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएं
- भारतीय ज्ञान मीमांसा और शिक्षणशास्त्र
- शिक्षण जानने और सीखने में निर्माणवाद
- समावेशी शिक्षा के संदर्भ में सीखने और शिक्षण के दृष्टीकोण
- घर और विद्यालय का शिक्षण शास्त्रीय व मनोसामाजिक संदर्भ
- सोचने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी की शिक्षणशास्त्रीय भूमिका
- भाषा , साहित्य और शिक्षणशास्त्र

गोष्ठी के विषय के अनुरूप अन्य विचार क्षेत्रों को शामिल किया जा सकता है। व्यवहारवादी, संज्ञानवादी, रचनावादी, और निर्माणवादी दृष्टियों के द्वारा न केवल सीखने की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है वरन सीखने के नए तरीके भी डिजाइन किए जा सकते हैं। इस गोष्टी के माध्यम से शिक्षा विभाग शिक्षा से जुड़े अध्येताओं और शोधकर्ताओं को निम्नलिखित विचार क्षेत्रों पर संवाद के लिए आमंत्रित करता है।

❖ **पंजीकरण शुल्क ::**

- संकाय सदस्य: 700/-

- शोध विद्यार्थी: 500/-
- पंजीकरण शुल्क आयोजन स्थल पर देय होगा.

❖ **मुख्य तिथियाँ :**

- सारांश भेजने की अंतिम तिथि: 15 मार्च, 2015
- सारांश स्वीकृति की सूचना:18 मार्च, 2015
- लेख/ शोधपत्र भेजने की अंतिम तिथि: २२ मार्च 2015

❖ **रहने की व्यवस्था:**

पूर्व सूचना और मांग के आधार पर विश्वविद्यालय के अतिथिगृह और छात्रावासों में आगंतुकों के रहने की व्यवस्था की जाएगी.

❖ **संपर्क:**

- ***पत्राचार हेतु:***:

शिक्षा विद्यापीठ
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गाँधी हिल्स वर्धा -442005

- ***व्यक्तिगत संपर्क हेतु:*** श्री ऋषभ कुमार मिश्र (rishabhrkm@gmail.com , 07057392903),
- श्री धर्मेन्द्र नारायणराव शंभरकर dharmeshshambharkar@gmail.com , 08007573829)